इकाई 25 पर्यटक का व्यवहार

इकाई की रूपरेखा

25.0 उद्देश्य

25.1 प्रस्तावना

25.2 आगंतुक की परिभाषा

25.3 भारत : पर्यटन स्थल और पर्यटक

25.4 पर्यटक व्यवहार और पर्यावरण

- 25.4.1 पर्यटक और भौतिक पर्यावरण
- 25.4.2 सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और पर्यटक व्यवहार
- 25.4.3 पर्यटक व्यवहार और आर्थिक परिवेश

25.5 असंतुलन की रोकथाम

- 25.5.1 पर्यटकों की भूमिका
- 25.5.2 सरकार की भूमिका

25.6 सारांश

25.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

25.0 उद्देश्य

पर्यटन आजकल विश्व की अर्थव्यवस्था में निर्णायक भूमिका निभाने लगा है। वास्तव में भ्रमण और पर्यटन मिलकर धन, लाभ और रोजगार की दृष्टि से सबसे बड़ा उद्योग है। इसकी संभावना प्रतिदिन बढ़ रही है क्योंकि विदेशी और घरेलू दोनों प्रकार के पर्यटकों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है। एक तरफ जहाँ पर्यटक इस व्यापार की रीढ़ है और इसी के बल पर करोड़ों रुपयों का उद्योग खड़ा है वहीं यह भी नहीं भूलना चाहिए कि उनके गैर जिम्मेदाराना व्यवहार से पर्यावरण बर्बाद हो रहा है। अतएव इस इकाई में हमारा उद्देश्य आपको :

- आगंतुक शब्द का अर्थ समझाना है,
- पर्यटकों के एक संक्षिप्त इतिहास और आज की दुनिया में उनके बढ़ते हुए महत्व से अवगत कराना है,
- गैरजिम्मेदाराना पर्यटक व्यवहार के कुपरिणामों से अवगत कराना है ,
- आगंतुकों की ओर से एक पारिस्थितिक संवेदी व्यवहार की आवश्यकता का महत्व समझाना है, और
- आगंतुक पर्यावरण संतुलन को ठीक तरह बनाए रखने के कुछ उपाय के बारे में बताना है।

25.1 प्रस्तावना

इस समय यह कहना अनावश्यक है कि पर्यटकों की संख्या जितनी ज्यादा होगी पर्यटन से होने वाली आमदनी उसी अनुपात में बढ़ती जाएगी। इससे सम्बद्ध आंकड़ों को देखने से बात और भी स्पष्ट हो जाएगी। विश्व पर्यटन संगठन (WTO) के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लगभग पचास करोड़ पर्यटकों ने 1993 में यात्रा की और इन यात्राओं में तीन हजार चालीस करोड़ (304 बीलियन)

अमेरीकी डॉलर खर्च किए। विश्व के कुल निर्यात में पर्यटन का हिस्सा 8 प्रतिशत है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में सेवाओं में 30 प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा और पूरी दुनिया में दस करोड़ से भी ज्यादा रोजगार प्रदान करता है। यह किसी भी एक अकेले औद्योगिक क्षेत्र की तुलना में अधिक लोगों को रोजगार देता है और जिसका अधिसंरचनात्मक सुविधाओं (ढुलाई, परिवहन और रेस्तरां) पर निवेश अनुमानत: 30 हजार करोड़ (3ट्रिलियन) अमरीकी डॉलर है। यह कहना नितांत स्वभाविक है कि यह पर्यटक महत्व के स्थानों की ओर सदैव बढ़ती हुई भ्रमणकारियों की संख्या के कारण संभव हुआ है। विश्व पर्यटन संगठन (WTO) के अनुसार दक्षिण एशिया में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन में नवें दशक के अन्तिम पाँच वर्षों में 5.25 प्रतिशत वृद्धि की आशा है जबकि शेष सम्पूर्ण विश्व में संभावित वृद्धि 4.4 प्रतिशत होने की उम्मीद है। पर्यटन की दृष्टि से एशिया में आनेवालों की सबसे बड़ी संख्या भारत में आती है। ऐसे पर्यटकों के बड़े पैमाने पर आगमन से आगन्तुकों का व्यवहार विशेष रूप से पर्यावरण के साथ उनके संबंधों के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। फिर भी आगन्तुक व्यवहार के संबंध में विस्तृत विचार विमर्श से पहले हमें आगन्तुक शब्द का क्या अर्थ है यह समझ लेना चाहिए।

25.2 आगन्तुक की परिभाषा

पर्यटन के संदर्भ में आगन्तुक का मतलब पर्यटक होता है। अत: व्यावहारिक दृष्टि से आगन्तुक का अर्थ पर्यटक है। इस इकाई में आगन्तुक एवं पर्यटक का पर्याय के रूप में उपयोग किया गया है।

पर्यटन में प्रमुख भूमिका पर्यटक की है। उसकी उपस्थिति के बिना पर्यटन अर्थहीन है। टूरिस्ट (पर्यटक) शब्द की उत्पत्ति तेरहवीं शताब्दी में हुई थी। टूर (भ्रमण) शब्द से टूरिस्ट (पर्यटक) बना है और यह टूर लैटिन शब्द टर्नस से निकला है जिसका अर्थ चक्र या घूमने वाला चक्र है।

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस शब्द का उपयोग एक जगह से दूसरी जगह की यात्रा करने, घूमने निकलने या देश या प्रदेश के प्रमुख भागों को छूते हुए गोलाकार भ्रमण करने के संदर्भ में किया जाता था। बाद में टूरिस्ट शब्द की कई परिभाषाएं सामने आईं।

पर्यटक आंकड़ों को एकत्र करने और अन्तर्राष्ट्रीय संगति को सुनिश्चित करने के महत्व का अनुभव करते हुए 1937 में लीग ऑफ नेशन्स की सांख्यिकीय विशेषज्ञ समीति ने परिभाषा निश्चित की। लीग ऑफ नेशन्स ने सदस्य देशों की सहमति से विदेशी पर्यटक शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया है :

कोई व्यक्ति प्राय: जहाँ का निवासी हो उसके अतिरिक्त किसी देश में कम से कम 24 घंटे के लिए जाता है। अन्य देशों के भ्रमण के अनेक कारण हो सकते हैं; सुख के लिए, घरेलू कारणों से, स्वास्थ्य, व्यापार, शिक्षा, प्रतिनिधिक सभा (वैज्ञानिक, प्रशासनिक, धार्मिक, क्रीड़ा आदि)। इसमें वह लोग भी सम्मिलित हैं जो समुद्री रास्तों से घूमने आते हैं 24 घंटे से भी कम ठहरते हैं।

विदेशी पर्यटक के सामान घरेलू पर्यटक शब्द के लिए कोई सर्वत: मान्य परिभाषा नहीं है फिर भी इसके लिए कुछ मापदंड निर्धारित किए जा सकते हैं :

निवास स्थान : आम तौर से देश की सीमा में ही भ्रमण करने वाले सैलानियों को घरेलू पर्यटक कहा जाता है।

भौगोलिक सीमा : राष्ट्रीय क्षेत्र के भीतर

भ्रमण की अवधि : अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक की मान्य परिभाषा के अनुसार घरेलू पर्यटक वह है जो कम से कम 24 घंटे अपने सामान्य निवास से अलग रहकर समय व्यतीत करता है या दूसरे स्थल पर रात गुजारता है।

इसमें दो और बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

की गई यात्रा की दूरी : यह दूरी 40 से 160 किलोमीटर के मध्य हो सकती है।

प्रेरणा : लाभकर कार्यों के अतिरिक्त किसी और उद्देश्य से उस स्थान की यात्रा।

कभी कभी घरेलू पर्यटन में केवल अवकाश अथवा फुरसत की यात्रा ही सम्मिलित होती है। अब हम पर्यटन और पर्यटक के संक्षिप्त इतिहास पर एक दृष्टि डालेंगे और पता लगाएंगे कि पर्यटक गतिविधि से हाल में हुई तीव्र वृद्धि के क्या कारण हैं

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में पर्यटक इस विषय पर हमारी परिचर्चा भारत पर ही केंद्रित होगी। ऐतिहासिक अभिलेखों से यह स्पष्ट है कि विजयी यूनानी, व्यापारी रोमवासी, विद्धान चीनवासी और व्यापार करने वाले अरब किसी न किसी कारण से भारत की यात्रा पर आते रहे। ह्वान सिआंग, फ़ाहियान, अलबरूनी, अब्दुल रज्जाक और मारकोपोलो जैसे अमर पर्यटकों के विस्तृत विवरणों से हम अपने देश के अतीत से परिचित हुए हैं। अलबरूनी अपनी पुस्तक किताबुलहिन्द में धर्म एवं दर्शन, सामाजिक व्यवस्था, नागरिक एवं धार्मिक कानून, भूगोल, खगोलशास्त्र, उत्सव, आचरण एवं प्रथाएं और विविध प्रकार के अनेक विषयों से सम्बद्ध सूचनाएं प्रदान करता है। अलबरूनी ने पृथ्वी का विवरण देते समय भारत और उसकी नदियों, सरिताओं, पर्वतों, नगरों और लोगों का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। अलबरूनी उसका उल्लेख भी करता है जिसे आधुनिक समय में पारिस्थितिक संतुलन कहते हैं और प्रकृति की सुरक्षा की आवश्यकता भी व्यक्त करता है। अलबरूनी के समान ही बाबर भी अपने संस्मरण बाबरनामा में "लम्बे चौड़े देश हिन्दुस्तान" का सविस्तार विवरण प्रस्तुत करता है। वह भूगोल और जलवायु के विषय में लिखता है। भारत की तुलना मुस्लिम देशों से करते हुए वह कहता है कि भारत एक विचित्र देश है। उसके पहाड़, नदियाँ, जंगल, शहर खेत, पशु, वनस्पति, लोग, भाषा, वर्षा और हवाएं सब ही भिन्न हैं। बाबर भारत की वनस्पतियों एवं पशुओं का बहुत स्पष्ट वर्णन करता है। अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के बावजूद इससे पहले पर्यटन विनाशकारी कभी नहीं रहा। यही नहीं पर्यटन और पर्यटकों की संख्या बहुत प्रतिबन्धित और नियंत्रित रही है। धन्य है आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, परिवहन और संचार में विकास कि सारी दुनिया 'सार्वभौम ग्राम' में बदल गया है और मानव जीवन मशीनी हो गया है। आजकल मनुष्य निर्णय लेने के तनाव से बचने के लिए यात्रा करता है और भीड़ भाड़ वाले प्रदूषित नगर से भागने के लिए भी उसे भ्रमण करना पड़ता है। मानव तंत्र किसी बैटरी के सामान है जिसे समय समय पर आवेशित करना पड़ता है, एक वर्ष में एक अवकाश के पुराने प्रारूप के स्थान पर उपभोक्ता उन्मुख समाज में लोग वर्ष में 2-3 बार घूमने के लिए निकलने लगे हैं। भारत का पर्यटक व्यापार का अंश काफी प्रभावशाली रहा है। 1994 में विदेशों से लगभग 18 लाख के आसपास पर्यटक भारत आए। घरेलू पर्यटन भी बहुत तेजी से बढ़ा रहा है क्योंकि देशवासियों में अधिक अवकाश लेने की इच्छा भी पैदा हुई है और अतिरिक्त खर्च करने के लिए आय भी उपलब्ध हुई है। भारतीय अनुभवों की विशालता, विविधतापूर्ण भू-आकशति और संस्कृतियों के अन्तर्मिश्रण ने भारत को पर्यटकों का स्वर्ग बना दिया है।

25.3 भारत : पर्यटन स्थल एवं पर्यटक

इस अनुभाग में हम उन कारकों का मूल्यांकन करेंगे जिनके कारण अन्य पर्यटन स्थलों की तुलना में भारत का महत्व बढ़ता जा रहा है। इसके अलावा भारत के अन्य पर्यटन स्थलों और प्रकारों का भी अवलोकन करेंगे। यह आगन्तुकों या पर्यटकों के व्यवहार को समझने के लिए अच्छा साधन होगा।

भौगोलिक दृष्टि से भारत की प्राकृतिक विशेषताएं अनुपम हैं जैसे अप्रीतिकर हिम, मरुस्थल और गगनचुम्बी पर्वत श्रेणियाँ, उर्वर जलोढ मिट्टी के उपजाऊ मैदान, उष्णकटिबन्धीय वर्षा प्रचुर वन और घुमाववदार समुद्र तट। जातीय दृष्टि से यह देश अलग-अलग प्रजातियों का सम्मिश्रण है जिनमें मूल निवासी और बाद में आए हुए अप्रवासी, आक्रमणकारी एवं अधिवासी शामिल हैं। इस देश में हर प्रकार की मानव अभिव्यक्तियों को फलने फूलने के लिए उपयुक्त उर्वर धरती मिली। यह अभिव्यक्ति चाहे

भाषा के संबंध में हो, वेशभूषा, भोजन कला, या फिर कौशल के विषय में, यह सदैव पर्यटकों को आनन्दित करने हेतु और पर्यटकों के लक्ष्य के अनुरूप होती है।

देश का अनुपम भौतिक और सांस्कृतिक परिदृष्य पर्यटकों को आकृष्ट करता है। इसमें विदेशी और देशी दोनों प्रकार के पर्यटक शामिल होते हैं और इनकी रुचि और पसंद भी अलग-अलग होती है।

किसी पर्यटन स्थल का आकर्षण और वहाँ पर्यटकों का जाना कई कारकों पर आधारित होता है। अत: मौसम और जलवायु उनपर गहरा प्रभाव डालते हैं। गर्म देशों से आए लोग शिमला, मसूरी, दार्जिलिंग आदि पर्वतीय स्थलों पर जाना पसंद करेंगे। अन्तर्देशीय पर्यटक के लिए मौसम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उत्तरी भारत के कुछ क्षेत्रों जैसे दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद के लोग अपनी गर्मियाँ पर्वतीय स्थलों पर या दक्षिणी भारत के समुद्री जलवायु वाले क्षेत्रों में बिताना चाहते हैं

लोगों की पसंद भी बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसे लोग जो इतिहास या पुरातत्व में रुचि रखते हैं वह महलों, दुर्गों, खुदाई के स्थलों और ऐतिहासिक महत्व के स्थानों का भ्रमण करते हैं। वन्य जीवों में रुचि रखने वाले पर्यटक या वनस्पति विज्ञानी, प्राणी विज्ञानी, पक्षी विहारों, वनस्पतिक उद्यानों वन्यजीव आरक्षित क्षेत्रों आदि को वरीयता देंगे। जो लोग व्यापार में रुचि रखते हैं वह अपनी गतिविधियाँ महानगरों जैसे दिल्ली, मुम्बई , कलकत्ता, चेन्नई, बंगलौर आदि तक ही सीमित रखेंगे। प्रकृति प्रेमी पर्यटक घाटियों, समुद्र के रेतीले तटों, पहाड़ी स्थलों आदि पर जाना पसंद करेंगे। संस्कृति में रुचि रखने वाले पर्यटक सांस्कृतिक स्थलों, शिल्प ग्राम, राजस्थान के अन्दरूनी इलाकों, ठेठ देशी गाँवों आदि देखने में रुचि रखते हैं।

कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ वर्ष भर पर्यटकों का आवागमन होता रहता है जैसे गोवा, कोवलम। ये महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं जो विभिन्न प्रकार के सैलानियों का आदर सत्कार करते हैं। यहाँ रोमांचक खेलकूद का विशेष इंतजाम है।

अत: संक्षेप में पर्यटन स्थल निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है :

- सांस्कृतिक स्थल– जैसे ठेठ गाँव, शिल्प ग्राम वाले गाँव
- प्राकृतिक स्थल– जैसे पहाड़, तट, बंदरगाह, द्वीप, घाटी, मरुस्थल
- वन्यजीव स्थेल– जैसे वन्यजीव आरक्षित क्षेत्र, वनस्पतिक उद्यान
- ऐतिहासिक महत्व के स्थल– जैसे दिल्ली, आगरा, जयपुर
- धार्मिक महत्व के स्थल– दक्षिणी भारत के मंदिरों के नगर, जैसे पुरी
- व्यापारिक क्षेत्र– जहाँ पूर्णरूप से विकसित बाजार है
- शैक्षिक महत्व के स्थान– जैसे विश्वविद्यालय आदि

इस संदर्भ में याद रखने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि जो भी स्थल कोई पर्यटक देखता है या जहाँ भी जाता है वहाँ उसके और उस स्थल के पर्यावरण के बीच परस्पर सम्पर्क होता है। इस क्रिया कलाप में वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं और यह संबंध बहुआयामी होता है।

25.4 पर्यटक व्यवहार एवं पर्यावरण

पर्यटक किस प्रकार आचरण करता है, और वह कहाँ कहाँ घूमा फिरा, किस प्रकार वह लोगों से बातचीत करता है और वह खर्च किस प्रकार करता है आदि क्रिया कलापों से उसके पूरे व्यवहार का पता चलता है। अपने व्यवहार के हर पक्ष से पर्यटक सकारात्मक या नकारात्मक रूप से पर्यावरण को प्रभावित करता है। यहाँ हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इस इकाई में हम अपना ध्यान आगंतुकों के व्यवहार के निषेधात्मक प्रभावों पर ही ध्यान केंद्रित करेंगे। हालाँकि इसका उद्देश्य पर्यटक व्यवहार के सकारात्मक प्रभाव को कम से कम करके आंकना नहीं है। हमारे विचार का संबंध 'परजीवी'

पर्यटकों से है अर्थात वह लोग जो अपने इस आगमन से अधिकतम दोहन चाहते हैं। पर्यटकों का यह वर्ग पर्यावरण की जरा सी भी परवाह नहीं करता। इस प्रकार की समस्या शिक्षित तथा पारिस्थितिक संवेदी पर्यटकों के साथ नहीं होती।

इस भाग को सरल और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम पर्यावरण को विभिन्न घटकों में विभक्त करेंगे क्योंकि पर्यावरण में केवल भौतिक या जैविक पर्यावरण ही सम्मिलित नही है बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश भी शामिल है। इस प्रकार हम इन तीन घटकों को केंद्र में रखकर विचार विमर्श करेंगे, जैसे

- भौतिक पर्यावरण
- सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, और
- आर्थिक परिवेश

25.4.1 पर्यटक और भौतिक पर्यावरण

एक पर्यटक अपनी अनेक प्रकार की गतिविधियों और तौर तरीकों से पर्यटन स्थल के आसपास के भौतिक पर्यावरण को अस्तव्यस्त कर सकता है। ऐसी परिस्थितियों में पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि पर्यावरण पर किस सीमा तक बाहरी हस्तक्षेप हो रहा है और यह क्षेत्र किस हद तक पर्यटन का भार सहन कर सकता है। ऐसे ही बहुत से अनोखे पर्यावरण में पर्यटक को केवल दिन में सैर करने की अनुमति ही मिलती है और नियन्त्रित परिस्थितियों में स्थानीय समुदायों से उन्हें दूर रखा जाता है। यह स्थिति लक्षद्वीप द्वीपों की है जहाँ एक निर्जन द्वीप, बंगाराम, को पर्यटन विकास के लिए चुना गया। फिर भी बहुत से परम्परागत पर्यटक स्थलों में, जो बंगाराम की श्रेणी में नहीं आते, भौतिक पर्यावरण बहुत संरक्षित नहीं है। ऐसे स्थानों पर पर्यटकों के कार्यकलापों के कारण निम्नलिखित समस्याएं सामने आती हैं:

- **जूठा भोजन** – इसमें कागज के डिब्बे, पॉलीथीन के पैकेट, छोड़ा हुआ खाना, बोतलें, पत्तल आदि शामिल होता है। यह समस्या व्यापक रूप धारण कर चुकी है। पर्यटक अपने साथ खाद्य सामग्री लाते हैं जिनके अवशेष लापरवाही के साथ फैलाकर चले जाते हैं। अत: गोवा के तट पर आपको बोतल और पैकेट जगह जगह पर फैले हुए मिलेंगे। इनमें से कुछ अवशेष नष्ट किए जा सकते हैं जबकि प्लास्टिक से बनी वस्तुएं नष्ट नहीं की जा सकती या उसके विघटन में बहुत समय लगता है। यह प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट कर देता है।

- **कूड़े का ढेर** (खाद्य पदार्थ के अतिरिक्त) – यह पर्यटकों से जुड़ी महत्वपूर्ण समस्या है। पर्यटक इस बात से लगभग अनभिज्ञ होता है कि उसका यह कार्य भौतिक पर्यावरण को कितनी क्षति पहुँचा सकता है। तिरूपति या पुरी की मन्दिर नगरी इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। यहाँ आनेवाले श्रद्धालु अनुष्ठानों आदि के पश्चात उनके लिए व्यर्थ हो जाने वाले सामानों को इधर उधर फेंक देते हैं। अत: भूमि ही नहीं निकटवर्ती जल भी दूषित हो जाता है।

- **ऐतिहासिक स्थल** – पर्यटकों के लापरवाह व्यवहार का ऐतिहासिक स्थलों पर कई प्रकार से प्रभाव पड़ता है। फिल्म की शूटिंग करने वाले पर्यटकों के कारण एक विशेष प्रकार की समस्या पैदा होती है। अक्सर यह पाया गया है कि फिल्म शूटिंग के दौरान उस ऐतिहासिक स्मारक का वैभव स्थाई तौर पर क्षतिग्रस्त हो जाता है। यही समस्या दुर्ग, द्वीप, या समुद्र तट जैसे स्थलों के लिए भी सत्य है। ऐतिहासिक स्थलों के साथ एक और समस्या जुड़ी हुई है। यहाँ आने वाले पर्यटक अपना, अपने साथियों का नाम तथा अपने आने की तारीख इनकी दीवारों-छतों आदि पर खुरच कर लिख देते हैं। कभी कभी अपने आने की यादगार के तौर पर वहाँ का संगमरमर, किसी पत्थर के टुकड़े या अंश तोड़ कर ले जाना भी एक गंभीर और ऐतिहासिक स्मारक को क्षतिग्रस्त करने वाली समस्या है।

- **वन्य जीव एवं वनस्पति स्थल** – इन स्थलों की अपनी अलग समस्या है। किसी चिड़ियाघर या जीव आरक्षित क्षेत्र में पशुओं को छेड़ना या परेशान करना एक आम आदत है। इसके अतिरिक्त स्थानीय लोगों के साथ गुप्त सहयोग करके शासन के प्रतिबंध के बावजूद जानवरों का शिकार बहुत बड़ी समस्या है। वृक्षों की शाखाओं को तोड़ना और उनके तनों पर अपना नाम खोदना भी एक अलग प्रकार की समस्या है।

- **द्वीप और तट** – बहुत से ऐसे पर्यटक भी आते हैं जो अनजाने में स्थानीय पर्यावरण को हानि पहुँचाते हैं जैसे अत्यधिक तैराकी या स्क्यूबा डाइविंग से न केवल जल प्रदूषित होता है बल्कि समुद्री जीवों का आवास भी अस्त व्यस्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त पर्यटकों द्वारा मूंगा तोड़ना, विशेष रूप से लक्ष द्वीप में, या फिर समुद्री सीप और घोंघे या पत्थर आदि तोड़कर ले जाना भी भौतिक पर्यावरण को प्रभावित करता है।

इस प्रकार पर्यटक कई प्रकार से पर्यटन स्थल के भौतिक पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, जिनमें से कुछ का उल्लेख हमने ऊपर किया। अब हम यह देखेंगे कि किसी स्थान का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश पर्यटकों के आने से किस प्रकार प्रभावित होता है।

25.4.2 सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश एवं पर्यटक व्यवहार

यदि पर्यटन को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह विभिन्न संस्कृतियों का परस्पर मिश्रण है। आगन्तुक यह कम ही अनुभव करते हैं कि एक अलग संस्कृति, जीवनशैली और सामाजिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार एक सांस्कृतिक आदान प्रदान की प्रक्रिया चलते रहती है जिसमें आपस में मिलती हुई संस्कृतियाँ (विशेष रूप से अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए सत्य है) एक दूसरे पर प्रभाव डालती हैं। संस्कृति संक्रमण की ये प्रक्रिया थोड़ी सी एकतरफा है। देशी लोग विदेशी व्यवहार तो सीख लेते हैं किंतु विदेशी अपने कम समय के ठहराव के कारण ऐसा नहीं कर पाते। ऐसा विभिन्न बातों से व्यक्त होता है :

- **मन में बैठी हुई फिजूल खर्ची की आदत :** स्थानीय लोगों में या पर्यटकों में फिजूल खर्ची की आदत अधिक समृद्ध समुदायों से आती है जो पर्यटन के दौरान सामान्य जीवन में जैसे खर्च करते हैं उससे अधिक खर्च करते हैं। इसके बहुत से अप्रत्यक्ष नतीजे निकलते हैं क्योंकि जब स्थानीय लोगों के पास धन का अभाव हो जाता है तो वे कभी कभी अवैध कार्य भी करने लगते हैं।

- **नग्नता और मदिरापान :** नग्नता एवं मदिरापान की आदत कुछ पर्यटक अपने साथ लाते हैं। ये विशेष रूप से गोवा और कोवलम के लिए सत्य है। ये बात किसी न किसी तरह विदेशियों के लिए स्वीकार्य हो सकती है किंतु यहाँ भारत में इसके कारण पारम्परिक सामाजिक ढाँचे के टूटने का भय निहित है।

- **वस्त्र एवं भोजन :** कपड़ा पहनने और भोजन करने की आदतों की दृष्टि से भी विदेशियों और देशी लोगों में बड़ा अन्तर है, विशेष रूप से यदि आप की पृष्ठभूमि ग्रामीण या उपनगरीय है। इस कारण कई बार स्थानीय लोग अपना प्रतिरोध प्रकट रहते हैं या सहयोग देना बंद कर देते हैं।

- **धर्म :** यह सर्वविदित तथ्य है कि पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के धार्मिक विश्वास एक दूसरे से भिन्न होते हैं परंतु समस्या उस समय उत्पन्न हो जाती है जब पर्यटक या तो अपने धार्मिक विश्वास को देशी लोगों के विश्वास पर आरोपित करने का प्रयास करते हैं या उसमें हस्तक्षेप करते हैं। इससे कभी कभी नीयत खराब न होते हुए भी, केवल उत्सुकतावश या जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार की धार्मिक चर्चा समस्या का कारण बन सकती है।

- **जातीयता :** कभी कभी प्रजातियों, जातीयता आदि के विषय में जानने के उत्साह में पर्यटक जाने अनजाने आदिवासियों की प्रथाओं में हस्तक्षेप कर बैठते हैं। आदिवासी इसका विरोध करते हैं और अक्सर उनका यह विरोध हिंसक रूप ले लेता है। अभी हाल ही में अण्डमान निकोबार में आदिवासियों द्वारा पर्यटकों पर प्रहार किए जाने की कई घटनाएं घटित हुई हैं। इसी प्रकार पर्यटकों का धन और विश्व दृष्टिकोण आदिवासी धार्मिक अनुष्ठान, धर्मक्रियाएं, प्राचीन कला, घरेलू जीवन और सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र की गतिविधियों को रूपांतरित कर देते हैं। उदाहरणार्थ लद्दाख में मठ उत्सव अब शीत ऋतु में नही होते जो पर्यटन की दृष्टि से उपयुक्त समय नहीं है। वाणिज्यिकरण के कारण इसे अब ग्रीष्म ऋतु में आयोजित किया जाता है जब पर्यटक आते हैं। अन्दरूनी ग्रामीण अथवा आदिवासी क्षेत्रों में पर्यटक की घुसपैठ अन्य प्रकार की उलझनें पैदा कर सकता है। पर्यटक देशी लोगों को वस्तु के रूप में परिवर्तित कर देता है, उनके चित्र उतारता है, उनके घरों, जीवन शैली के फोटो खींचता है। उन्हें छूकर देखते हैं कि क्या वह वास्तविक है। वह उन स्थानीय लोगों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों और गहनों की बोली लगाता है। उनके संगीत को रिकॉर्ड करता है और उनकी संस्कृति का विश्लेषण करता है। इसका परिणाम यह निकलता है कि स्थानीय लोग पर्यटकों के प्रवेश को लेकर बंट जाते हैं। वह लोग जो पर्यटन उद्योग के नौकर होते हैं पर्यटकों के अत्यंत वैयक्तिक क्षेत्रों में घुसपैठ को प्रोत्साहन देते हैं किंतु दूसरे लोग अपनी संस्कृति के रूपांतरण पर नाराज होते हैं।
- **नशीली दवाओं का सेवन, वेश्यावृत्ति एवं बाल वेश्यावृत्ति :** आजकल पर्यटन स्थलों में नशीली दवाओं का अवैध व्यापार और बाल वेश्यावृत्ति कुछ पर्यटकों के घृणित रूप को प्रदर्शित करता है। व्यक्तिगत लाभों के लिए पर्यटन की भावना को समाप्त करने का यह एक घृणित कार्य है।

इसी प्रकार सांस्कृतिक आदान प्रदान के क्रम में कई समस्याएं पैदा होती हैं, जैसे भाषा, संचार, बोलचाल का व्यवहार, विचार विमर्श के विषय, जिन्हें यदि उचित ढंग से निपटाया न गया तो अप्रिय निष्कर्ष पैदा हो सकते हैं। किसी स्थान/स्थल की सामाजिक परिवेश पर पर्यटकों के परिणाम पर विचार करते समय मेहमान-मेजबान संबंध महत्वपूर्ण पक्ष बन जाता है। मेहमान-मेजबान संबंधों में कभी कभी ऐसी परिस्थितियां विभिन्न चरणों पर उत्पन्न हो सकती है जो दूसरी परिस्थितियों की ओर ले जाए। और ऐसा मेहमान या मेजबान के दृष्टिकोण के कारण हो सकता है। मेजबान की दृष्टि से विविध परिस्थितियां निम्न प्रकार हो सकती है :

क) सबका मुसकान के साथ स्वागत,

ख) शांत एवं अलग-थलग रहिए,

ग) पैसा छीनिए या धोखा दीजिए,

घ) मित्रतापूर्वक रहिए।

यदि पर्यटन को स्वस्थ स्थानीय परिवेश मापदंड के अनुसार आयोजित न किया गया तो कभी भी स्थानीय लोगों के रवैये में परिर्वतन हो सकता है।

मुसकान– ठंडापन– लूट खसोट– विद्वेश

या

विद्वेश– मित्रता आदि (टी. एस-2 के खंड 1 की इकाई 3 भी देखिए)

25.4.3 पर्यटक व्यवहार एवं आर्थिक परिवेश

किसी स्थान के आर्थिक परिवेश पर पर्यटक का स्थाई प्रभाव पड़ता है। जब पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था से जोड़ा जाता है तो यह निश्चित रूप से क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को लाभ पहुँचाता है। अतिथि-आतिथेय संबंध इस बात पर निर्भर होता है कि पर्यटन स्थानीय लोगों को कितना लाभ

पहुँचाता है। इसके अतिरिक्त जहाँ पर्यटकों और स्थानीय लोगों के मध्य अंतर होता है वहां पर्यटन के खिलाफ स्थानीय प्रतिरोध जन्म लेता है और पर्यटकों के कुछ आचरणों का विरोध किया जाता है। जैसे हैदराबाद में दुल्हन खरीदने की प्रथा के खिलाफ विरोध के रूप में प्रकट हुआ है। कभी कभी पर्यटन पर नव-उपनिवेशी प्रवृत्ति हावी हो जाती है जहां पर्यटन का अधिकांश लाभ विदेशी नियंत्रण के कारण देश से बाहर जाता है। कुछ मामलों में निजीकरण के कारण स्थानीय नियंत्रण कम हुआ, किंतु भारत में निजी एवं सरकारी क्षेत्र पर विदेशी नियंत्रण लगातार बढ़ता जा रहा है। जन सांस्कृतिक प्रभाव के अतिरिक्त नव-उपनिवेशी नियंत्रण में विदेशी प्रभाव बढ़ता जाता है और स्थानीय विशेषज्ञों तथा स्थानीय प्राथमिकताओं को दरकिनार कर दिया जाता है। पर्यटकों के विरूद्ध आतंकवादी गतिविधियां और हिंसा या उन्हें दी जाने वाली धमकी इस प्रकार के पर्यटन विकास का परिणाम हो सकती है। इसके अतिरिक्त कला एवं कौशल या स्मृति चिह्न व्यापार की वृद्धि ऐसे उत्पादों के बाजार को बढ़ा कर भी या तो उत्पादक को लाभ नहीं पहुंचता या देशी कला को ले जाने योग्य बनाकर उसके महत्व को बहुत गिरा देता है। इनके अलावा कुछ और आर्थिक कुपरिणाम निम्नलिखित हैं :

- पर्यटन कभी कभी और कहीं कहीं स्थानीय लोगों और प्राय: परम्परागत आर्थिक कार्यकलाप जैसे कृषि, मछली पालन, ताड़ी निष्कासन, आदि की कीमत पर विकसित हुआ है।
- जहाँ पर्यटन ही आय का एकमात्र साधन है वहाँ मौसमीयता एक प्रमुख आर्थिक समस्या है और इससे मौसमी बेरोजगारी फैलती है। इस प्रकार पर्यटन की अक्सर "उत्सव या अकाल'' उद्योग कहा जाता है। दस्तकारों पर पर्यटन का प्रभाव खास तौर पर मौसमी होता है और पर्यटन में यदि किसी कारण रूकावट आती है तो वह सम्पूर्ण रूप से बर्बाद हो जाते हैं। कशमीर एक ज्वलंत उदाहरण है।

अंधाधुंध और अत्यधिक खरीददारी ने दस्तकारी का व्यावसायीकरण कर दिया है। यही कारण है कि बहुत से शिल्पग्राम जहाँ कभी सस्ते दामों में हस्तशिल्प मिला करते थे अब बहुत महंगे और आम आदमियों की पहुँच से बाहर होकर रह गए हैं। यह स्थिति हस्तशिल्प की गुणवत्ता में गिरावट (जैसे असल हस्तशिल्प की नकल जो बाजार में पहुँच जाती है) और मानवीय मूल्यों में ह्रास का कारण बनती है। ऐसी हालत में छोटा और निर्धन शिल्पी सबसे अधिक घाटे में रहता है। और यह सब कुछ ऐसे क्षेत्रों में कृत्रिम मुद्रा स्फीति की ओर ले जाते हैं। इस तरह यह क्रम जारी रहता है।

किसी पर्यटन स्थल का एकतरफा आर्थिक विकास भी पर्यटक के फिजूल खर्ची का नतीजा होता है। इसलिए केवल ऐसी वस्तुओं का उत्पादन प्रारंभ होता है जिसकी पर्यटकों में मांग होती है। ये प्रवृत्ति कभी कभी मौलिक एवं उपभोक्ता वस्तुओं के अभावया उनकी कीमतों में बढ़ोत्तरी का कारण बनती है।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यटक पर्यटन स्थल के भौतिक पर्यावरण पर अपना प्रभाव किस प्रकार डालता है ? वर्णन कीजिए।

.....

.....

2) पर्यटक स्थल के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को निषेधात्मक तरीके से प्रभावित करने वाले प्रमुख व्यवहार रूपों का जिक्र कीजिए।

.....

.....

3) पर्यटक व्यवहार और उस स्थान के आर्थिक परिवेश के तीन प्रमुख पहलुओं की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

25.5 असंतुलन की रोकथाम

इस भाग में इन परिस्थितियों से निपटने की चर्चा की गई है। देश के अन्दर और बाहर आने जाने वाले पर्यटकों और परिणामस्वरूप बढ़ती हुई पर्यटक यात्राओं की दृष्टि से यह और अधिक अनिवार्य बन गया है। अपनी परिचर्चा को व्यवस्थित करने की दृष्टि से हमने इस भाग को दो उपभागों में विभक्त किया है।

- आगन्तुक की भूमिका
- सरकार की भूमिका

25.5.1 पर्यटकों की भुमिका

जिस प्रकार आगन्तुकों को सम्पूर्ण रूप से अपनी यात्रा से आनन्द लेने का अधिकार है उसी प्रकार उस स्थान विशेष के पर्यावरण के प्रति उनके कुछ कर्तव्य भी हैं :

- पर्यटकों को चाहिए कि वे अपने अवशेषों का निपटारन सावधानी पूर्वक करें। इसमें खाद्य पदार्थ, कूड़ा, बोतलें आदि शामिल हैं। सभी स्थानों पर उन्हें इसका ख्याल रखना चाहिए। इससे न केवल उस स्थान का भौतिक सौंदर्य बरकरार रहेगा बल्कि वह जब पुन: वहाँ आएंगे तो वह स्थान उन्हें वैसा ही खूबसूरत मिलेगा।
- पर्यटकों को उन स्थानों की संस्कृति एवं सामाजिक परम्पराओं के प्रति सतर्क रहना चाहिए जहाँ वे जाते हैं। उन्हें स्थानीय रीति रिवाजों में हस्तक्षेप करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इसके साथ ही उन्हें गन्तव्य स्थल की भाषा, वहाँ के सामाजिक लोकाचार की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। वहाँ के लोगों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना चाहिए न कि मनोरंजन के तौर पर उन पर बोझ बनना चाहिए।
- पर्यटकों को दूसरों की सहायता करनी चाहिए जिनमें स्वयं और स्थानीय लोग दोनों ही शामिल हैं ताकि उस स्थान की सामाजिक-आर्थिक परिवेश की पवित्रता बनाई रखी जा सके। यदि स्थानीय लोग अपने उत्तरदायित्व के प्रति लापरवाह या असावधान हैं तो पर्यटकों को उन्हें सलाह देनी चाहिए और उन्हें शिक्षित करना चाहिए।
- इन सबसे महत्वपूर्ण है कि पर्यटक पर्यटन के प्रति उदार रवैया अपनाएं और स्वयं को संपूर्ण पृथ्वी को सुरक्षित रखने में सक्रिय भागीदारी समझें। ऐसा ही सार्वभौम एवं मानवीय दृष्टिकोण हितकर होगा।

25.5.2 सरकार की भूमिका

पर्यटन स्थल के विकास और रखरखाव से सम्बद्ध शासन एवं अधिकारियों को भी कुछ उपाय करना चाहिए।

- अब यह मान्य धारणा है कि पर्यटन योजना को संपूर्ण योजना से अलग नहीं समझना चाहिए बल्कि समग्र भौतिक एवं आर्थिक योजना का संगठित भाग समझना चाहिए। इसे व्यवहार में भी लाना चाहिए।
- विदेशी तथा देशी दोनों ही प्रकार के पर्यटकों की रूपरेखा तैयार करना पर्यटन योजना एवं विकास कार्य (देखिए टी.एस-2 के खंड-1 की इकाई 1 व 2) में अत्यंत प्रभावी भूमिका निभा सकता है।
- पर्यटकों की संख्या को नियंत्रित रखना भी स्वस्थ अतिथि-आतिथेय संबंधों को प्रोत्साहित करने में बहुत महत्व रखता है। उदाहरणार्थ भूटान एक निर्धारित संख्या से अधिक पर्यटकों को प्रतिवर्ष अपने देश में आने की अनुमति नहीं देता क्योंकि वह समझते हैं कि अधिक संख्या में पर्यटकों के आने से देश पर भौतिक एवं सामाजिक बोझा बढ़ेगा।
- पर्यटन स्थलों के पर्यावरण की सुरक्षा से संबंधित नियमों को कड़ाई के साथ लागू करना चाहिए। प्रयास करना चाहिए कि यदि उपलब्ध नियमों में कोई कमी है तो उसे दूर कर दिया जाए।
- पारिस्थितिक पर्यटन एवं टिकाऊ अथवा नियंत्रित पर्यटन अधिकारियों का आदर्श होना चाहिए। किसी निर्धारित समय में किसी निश्चित पर्यटक स्थल पर आनेवाले पर्यटकों की संख्या को प्रतिबंधित/नियंत्रित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। ऐसा करना पर्यटन को प्रतिबंधित करना नहीं है बल्कि यह एक वैकल्पिक विधि है।
- वीडियो-ऑडियो कैसेट्स जैसे मनोरंजन के माध्यमों और पर्यटन विभाग के लोगों के द्वारा आगंतुकों में जागृति उत्पन्न करनी चाहिए और पर्यावरण की सुरक्षा की आवश्यकता के विषय में शिक्षित करना चाहिए।
- निजी क्षेत्र को इसमें सम्मिलित कर भी पर्यटन को काफी हद तक सुरक्षित किया जा सकता है।

परस्पर सम्बद्ध एजेंसियों और पर्यटकों के सहयोग से पर्यटन को पर्यावरण का मित्र बनाया जा सकता है। "भारत को देखना भारत को प्यार करना है"– यही हमारा आदर्श वाक्य होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) किसी पर्यटक स्थल के पर्यावरणीय संतुलन की रोकथाम में पर्यटक की भूमिका का वर्णन कीजिए।

.....

.....

2) पर्यावरण के साथ दुर्व्यवहार को रोकने के लिए अधिकारी किस प्रकार पर्यटक के व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं ?

.....

.....

25.6 सारांश

पर्यटकों के द्वारा पर्यावरण के लिए पैदा किए गए खतरे की दृष्टि से पर्यटक व्यवहार का अध्ययन आवश्यक है। विविध भौतिक एवं सांस्कृतिक स्थलों वाला भारत विशाल संख्या में आनेवाले पर्यटकों की मेहमाननवाजी करता है और यहाँ आनेवाले पर्यटकों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। पर्यटक अपने व्यवहार एवं आचरण के कारण एक से अधिक प्रकार के मनोरंजन स्थलों के पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। ये न केवल भौतिक पर्यावरण को नष्ट करते हैं बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को भी नुकसान पहुँचाते हैं। इसलिए इस समस्या से सावधानी के साथ निपटना चाहिए। इसमें पर्यटक एवं पर्यटन अधिकारी दोनों का ही योगदान अपेक्षित है।

25.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 25.5.1

2) देखिए उपभाग 25.4.2

3) देखिए उपभाग 25.4.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 25.5.1

2) देखिए उपभाग 25.5.2

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

वन्दना शिवा	:	**वायलेंस ऑफ ग्रीन रेवोल्यूशन**
आर कारसन	:	**द सी एराउंड अस,** आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, 1951
आर मार्श	:	**राइट्स ऑफ नेचर,** यूनिवर्सिटी ऑफ विसलॉनसिन प्रेस, मैडिसन, 1989
वरनेस वुल्फगेंग (एड.)	:	**आस्पेक्ट्स ऑफ इकॉलॉजीकल प्राब्लम्स एंड एन्वारमेंटल अवेयरनेस इन साउथ एशिया,** नई दिल्ली, 1993